नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

चिटफंड के जाल पर अब निर्णायक कार्रवाई जरूरी

कम समय में पैसा दोगुना करने और एफडी से कई गुना अधिक ब्याज देने का लालच हमेशा से आम निवेशकों को ठगने का आसान हथियार रहा है. मध्य प्रदेश तक पहुंची अरबों रुपये की चिटफंड धोखाधड़ी की जांच ने एक बार फिर साबित किया है कि आर्थिक अपराधों के मामले में निवेशकों की जागरूकता के साथ सरकारी निगरानी भी बेहद जरूरी है. सीबीआई और ईडी की जांच की आंच अब जबलपुर तक पहुंची है और सीआईडी को मध्य प्रदेश के चार जिलों से 11 केस डायरियां विवेचना के लिए मिली हैं. प्रारंभिक जानकारी के मुताबिक इन मामलों में करीब 1600 निवेशकों से लगभग 42 करोड़ रुपये की ठगी की गई है. यह तो केवल उन मामलों की तस्वीर है, जिनकी जांच फिलहाल सामने आई है. बताया जा रहा है कि देश के 17 राज्यों में इस नेटवर्क ने लोगों को अपने जाल में फंसाया. दस सोसायटियों के माध्यम से देशभर में करोड़ों निवेशकों से हजारों करोड़ रुपये जुटाने के आरोप बेहद गंभीर हैं. मध्य प्रदेश में भी दो लाख से अधिक निवेशकों से सैकड़ों करोड़ रुपये जुटाए जाने की बात सामने आई है.

चिटफंड घोटालों का इतिहास बताता है कि ऐसे मामलों में कार्रवाई लंबी खिंचने का सबसे बड़ा नुकसान आम निवेशकों को होता है. पश्चिम बंगाल का चर्चित शारदा चिटफंड घोटाला इसका बड़ा उदाहरण है. हजारों करोड़ रुपये के इस घोटाले की जांच और कानूनी प्रक्रिया वर्षों से चलती रही है और बड़ी संख्या में निवेशकों की पूरी रकम अब तक वापस नहीं हो सकी है. इसलिए मध्य प्रदेश के मौजूदा मामलों में यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि जांच और मुकदमेबाजी के बीच पीड़ित निवेशकों की उम्मीद दम न तोड़े. इस पूरे मामले में सबसे चिंताजनक पहलू ठगी का तरीका है. आरोपियों ने छोटे शहरों और कस्बों में स्थानीय लोगों को मैनेजर और एजेंट बनाया, ताकि निवेशकों में भरोसा पैदा हो. कम समय में रकम दोगुनी करने अथवा आकर्षक ब्याज का लालच दिया गया. जब बड़ी रकम जमा हो गई तो कथित रूप से मुख्य कर्ताधर्ता फरार हो गए. यानी ठगी की पटकथा योजनाबद्ध तरीके से तैयार की गई थी. और गंभीर बात यह है कि संबंधित सोसायटियों ने कथित रूप से पंजीयन और संचालन के नियमों की भी अनदेखी की.

केंद्रीय सहकारी समितियों के रूप में पंजीयन का लाभ उठाकर अलग-अलग राज्यों में गतिविधियां चलाने और सदस्यों के अलावा अन्य लोगों से धन जुटाने जैसे आरोप सामने आए हैं. यदि ये आरोप जांच में सही पाए जाते हैं तो सवाल केवल आरोपियों पर नहीं, बल्कि उस नियामकीय व्यवस्था पर भी उठेगा जो इतने बड़े पैमाने पर धन संग्रह होने देती रही. अब जरूरी है कि जांच केवल आरोपियों की गिरफ्तारी और संपत्ति जब्ती तक सीमित न रहे. निवेशकों का पैसा वापस दिलाना सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए. एजेंटों की भूमिका, बैंक खातों, संपत्तियों और धन के अंतिम लाभार्थियों की गहराई से जांच जरूरी है. साथ ही राज्यों के बीच सूचनाओं के आदान-प्रदान की ऐसी व्यवस्था बने कि एक राज्य में संदिग्ध गतिविधि सामने आते ही दूसरे राज्यों को भी तत्काल चेतावनी मिल सके.

निवेशकों को भी असामान्य रूप से अधिक रिटर्न के लालच से सावधान रहना होगा. पैसा दोगुना करने का दावा जितना आकर्षक लगता है, उसमें जोखिम उतना ही बड़ा हो सकता है. सरकार और नियामक संस्थाओं को गांव-कस्बों तक वित्तीय जागरूकता अभियान पहुंचाना चाहिए. चिटफंड घोटाले केवल पैसे की चोरी नहीं होते, वे लोगों की वर्षों की बचत और भविष्य की सुरक्षा छीन लेते हैं. शारदा जैसे पुराने मामलों से सबक लेते हुए अब जरूरी है कि नए मामलों में जांच समयबद्ध हो, दोषियों की संपत्ति से निवेशकों की रकम वापस हो और जिम्मेदार संस्थाओं की जवाबदेही भी तय की जाए. वरना हर नया चिटफंड घोटाला पुराने घाव पर एक और चोट साबित होगा.

दिल्ली डायरी

जेन जी को साधने की भाजपाई व कांग्रेसी जुगत

प्रवेश कुमार मिश्र

जेन-जी यानी वर्ष 1997 से 2012 के बीच पैदा हुई आबादी को अपने पाले में करने के लिए भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस के रणनीतिकारों ने पिछले दिनों की घटनाओं को देखते हुए अपनी पारंपरिक राजनीति को पूरी तरह बदलकर 'डिजिटल और ट्रेंडी' रूप दे दिया है. दोनों ही दल यह भली-भांति समझते हैं कि इस पीढ़ी का ध्यान खींचने के लिए लंबे भाषणों के बजाय कुछ सेकेंड्स का सटीक और तीखा कंटेंट सबसे बड़ा हथियार है. संभवत: इसी वजह से इस डिजिटल जंग में जहां एक तरफ भाजपा की रणनीति पूरी तरह से जेन-जी की महत्वाकांक्षाओं और उनकी ऑनलाइन आदतों के इर्द-गिर्द बुनी गई है.

वहीं दूसरी तरफ, कांग्रेस पार्टी इस पीढ़ी के रोजमर्रा के संघर्षों, आर्थिक चिंताओं और उनके स्वभाव में छिपे विद्रोही रुख को अपना मुख्य हथियार बना रही है. इतना ही नहीं भाजपा नेशनल क्रिएटर्स अवार्ड्स जैसे आयोजनों के माध्यम से देश के बड़े यूट्यूबर्स और रील्स मेकर्स की एक मजबूत इन्फ्लुएंसर आर्मी तैयार कर रही है जो सरकारी योजनाओं को युवाओं की ही कूल भाषा में उन तक पहुंचाती है.

पार्टी तकनीकी विकास, स्टार्टअप कल्चर, यूपीआई की सफलता और वैश्विक मंच पर भारत की बढ़ती साख को दिखाकर युवाओं में राष्ट्रवाद और आधुनिकता का एक ऐसा अनूठा मिश्रण भरने में जुटी है जबकि कांग्रेस का सोशल मीडिया हैंडल अब बेहद आक्रामक और समकालीन पॉप-कल्चर के रंग में रंगा नजर आता है, जहां बॉलीवुड गानों, ट्रेंडिंग रील्स और व्यंग्यात्मक मीम्स का इस्तेमाल कर सीधे सरकार की नीतियों पर चोट की जाती है. पार्टी पेपर लीक, बेरोजगारी और बढ़ती आर्थिक असमानता जैसे मुद्दों को जेन-जी का सबसे बड़ा संकट बताकर उन्हें अपने साथ जोड़ने की कोशिश में है.

सीटों के तालमेल को लेकर पेंच

उत्तर प्रदेश की सियासत में आगामी चुनावों को लेकर सपा और कांग्रेस गठबंधन के बीच सीटों के बंटवारे को लेकर रस्साकशी तेज हो गई है. लोकसभा चुनाव की सफलता से उत्साहित दोनों दल अब राज्य की चुनावी बिसात पर अपनी पकड़ मजबूत करने की होड़ में हैं, जिससे कई महत्वपूर्ण सीटों पर पेंच फंसता नजर आ रहा है. हालांकि कांग्रेस पार्टी की ओर से राहुल गांधी लगातार अपने उत्तर प्रदेश के सांसदों से जानकारी जुटा रहे हैं ताकि सपा के साथ किसी स्तर पर अलगाव की स्थिति न उत्पन्न हो जाए. चर्चा है कि सपा खुद को राज्य के मुख्य क्षेत्रीय दल के रूप में स्थापित रखते हुए बड़े भाई की भूमिका से पीछे हटने को तैयार नहीं है. इसलिए कांग्रेस के पसंद की ज्यादातर सीटों पर पेंच फंसा हुआ है.

पंजाब में मिशन 117 की तैयारी

पंजाब की राजनीतिक बिसात पर आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर एक नया और दिलचस्प समीकरण आकार ले रहा है, जहां एक तरफ भाजपा ने अकाली दल के साथ पुराने रिश्तों की अटकलों को विराम देते हुए राज्य की सभी 117 सीटों पर अकेले चुनाव लड़ने का शंखनाद कर दिया है. जबकि दूसरी तरफ सूबे की सत्ता से बाहर चल रही कांग्रेस पार्टी अपनी खोई हुई जमीन वापस पाने के लिए पूरी ताकत झोंक रही है. पार्टी पारंपरिक वोट बैंक को सहेजने और आम आदमी पार्टी सरकार के खिलाफ बन रहे सत्ता विरोधी माहौल का फायदा उठाकर पंजाब की मुख्य राजनीतिक धुरी के रूप में खुद को दोबारा स्थापित करने की फिराक में है. कहा जा रहा है कि भाजपा का यह अकेला दांव असल में राज्य में एक स्वतंत्र और मजबूत राजनीतिक पहचान बनाने की दीर्घकालिक रणनीति का हिस्सा है.

इंडिया गठबंधन को एकजुट करने में जुटी कांग्रेस

संसद के हालिया मानसून सत्र में दिखाई दी विपक्षी एकजुटता को एक स्थायी स्वरूप देने के लिए कांग्रेस पार्टी अब बैकस्टेज डिप्लोमेसी में पूरी ताकत से जुट गई है. कांग्रेस नेतृत्व यह भली-भांति समझता है कि आगामी विधानसभा चुनावों और भविष्य की राजनीतिक चुनौतियों से निपटने के लिए इंडिया गठबंधन के बिखरते कुनबे को एक डोर में पिरोए रखना बेहद जरूरी है. कांग्रेस का प्रयास है कि तमाम मतभेदों को भुलाकर विभिन्न नीतिगत मुद्दों पर सरकार को घेरने के लिए एक सुर में आवाज उठाई जाए. संभवत: इसी वजह से कांग्रेसी रणनीतिकार इस बात को लेकर बेहद सतर्क है कि क्षेत्रीय स्तर पर होने वाली कोई भी खींचतान राष्ट्रीय स्तर के इस बड़े गठबंधन की नींव को कमजोर न कर दे. यही वजह है कि पार्टी अब राज्यों के कद्दावर क्षत्रपों के साथ सीधे और निरंतर संवाद की नीति अपना रही है, ताकि किसी भी विवाद को तूल पकड़ने से पहले ही आपसी सहमति से सुलझाया जा सके. कांग्रेस की कोशिश एक ऐसा न्यूनतम साझा कार्यक्रम और समन्वय समिति बनाने की है, जो गठबंधन के सहयोगियों के बीच भरोसे की कमी को दूर कर सके और जनता के बीच यह संदेश जाए कि यह मोर्चा केवल तात्कालिक स्वार्थों के लिए नहीं, बल्कि एक ठोस और दीर्घकालिक विमर्श के तहत एकजुट है.

सड़क दुर्घटनाओं की चौंकाती हकीकत

ऋतुपर्ण दवे

भारत में सड़क दुर्घटनाओं में कमीं न आना बेहद दुर्भाग्यजनक है. कई वर्षों के आधिकारिक सरकारी आंकड़े बताते हैं कि लाख कोशिशों के बावजूद आशातीत सफलता न मिलना, कहीं न कहीं सड़क पर चलने वालों की मनोदशा पर भी निर्भर करता है. इसी चलते हर रोज कहीं न कहीं से भीषण सड़क दुर्घटनाओं के दुखद समाचार मिल ही जाते हैं. भारत सरकार की परिभाषा में एक से ज्यादा लोगों की मौत को भीषण सड़क हादसा माना जाता है. सड़क हादसों में बेवजह लाखों जान हर वर्ष जाती है.

यदि केवल किसी एक वर्ष के डेटा पर नजर डालें तो काफी चिंताजनक स्थिति है. वर्ष 2023 के आंकड़े ही लें तो दुर्घटनाओं की भयावह तस्वीर उभरती है. इस वर्ष 68783 हिट एण्ड रन मामलों में 31209 मौतें हुईं जबकि 54574 लोग घायल हुए. सभी तरह की दुर्घटनाओं का विश्लेषण काफी सोचने और डराने को मजबूर करता है. इसी वर्ष सड़क पर खड़े वाहनों से टकराकर 13810 दुर्घटनाओं में 5636 मौतें और 12575 घायल हुए. पीछे से टकराने की दुर्घटनाओं में 36804 मौतें 107161 घायल हुए. साइड से टक्कर की 73805 घटनाओं में 20623 मौतें और 74017 घायल हुए. सड़क से नीचे गिरने की 21527 घटनाओं में 10196 लोगों की मृत्यु हुई, 20719 घायल हुए. स्थिर वस्तु से टकराने की 17451 घटनाओं में 8291 मृत्यु और 16416 घायल हुए. जबकि वाहन पलटने की 18905 घटनाओं में 9124 की मृत्यु और 21216 घायल हुए. वहीं आमने-सामने की टक्कर की 84348 दुर्घटनाओं में 28989 की मृत्यु और 89867 घायल हुए. अन्य दुर्घटनाओं में 71298 घटनाओं में 22109 की मृत्यु हुई जबकि घायलों की संख्या 66280 रही. इस तरह केवल 2023 में 480583 दुर्घटनाओं में 172890 मौतें और 462825 दुर्घटना का शिकार हुए जो अन्य क्षति छोड़कर, मानवीय हैं.

सरकार के सारे प्रयास फेल: सड़क दुर्घटनाओं को नियंत्रित करने के लिए सरकार के स्तर पर हर वर्ष राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह लोगों को जागरूक करने के लिए चलाया जाता है. प्रदेश स्तर पर चालानी कार्रवाई पूरे वर्ष होती है, जिसका एक मात्र उद्देश्य लोगों को सुरक्षित ड्राइविंग के लिए प्रेरित करना होता है. बावजूद यह सारे प्रयास अब भी नाकाफी दिखाई देते हैं.

व्यक्तिगत लापरवाही बड़ी वजह: आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि ज्यादातर दुर्घटनाएँ तेज गति, बिना हेलमेट, वाहनों के बीच बिना सुरक्षित दूरी, सुस्ती, नींद के झोंके, वाहन चलाते समय धूम्रपान, शराब या किसी अन्य नशे में होने से दुर्घटनाएँ होती हैं. रात में हमारे वाहन के हेडलाइट्स, टेल लाइट्स और इंडिकेटर्स खराब होने या काम नहीं करने, टायरों पर ध्यान नहीं देने और ज्यादा पुराने, घिसे, कटे-फटे, क्रैक्स से भरपूर टायरों का उपयोग, बरसात के मौसम में घिसे टायरों पर ट्रैक्शन कम होने से वाहन फिसलने और प्राय: ब्रेक नहीं लगने से भी दुर्घटनाएं आम हैं. ब्रेक की नियमित जांच से कई तरह की दुर्घटनाओं को टाला जा सकता है. वाहन चलाते समय मोबाइल पर बातें भी ध्यान भटकाता है. गंतव्य तक पहुंचने की जल्दी में आगे निकलने की होड़ और ओवर टेक भी वजह है. छोटी सड़कों पर ध्यान नहीं देना कि कहीं सामने दूसरा वाहन तो नहीं आ रहा? जबकि हाइवे पर इंडीकेटर का सही उपोयग नहीं करना दुर्घटनाओं का सबब बनता है. ओवरटेक की होड़ से भी दुर्घटनाएँ होती हैं. यह सभी वो छोटे-छोटे उपाय व यातायात के नियम हैं जिन्हें हम जानते तो हैं पर अमल में नहीं लाते हैं. थोड़ी सतर्कता, थोड़ी सजगता से बड़ी-बड़ी दुर्घटनाओं को टाला जा सकता है. इसीलिए यातायात विभाग का बेहद लोकप्रिय नारा है दुर्घटना से देर भली.

कश्मीरी पंडितों को फिर मिली धमकी

जम्मू कश्मीर में वापस लौटे कश्मीरी पंडितों को प्रधानमंत्री रोजगार योजना के तहत विभिन्न विभागों में नौकरी दी गई है. जब धमकी का पहला पत्र मिला तो राज्य सरकार ने इन हिंदू कर्मचारियों को छुट्टी पर भेजने का निर्देश दिया.

जम्मू-कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देने वाले संविधान के अनुच्छेद 370 को हटाए जाने के बाद वहां बदलाव की उम्मीद थी, लेकिन पहलगाम के आतंकी हमले से फैली दहशत के बाद भारत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के जरिए पाकिस्तान के आतंकी अड्डों का सफाया कर दिया. इसके बावजूद अब आतंकी अड्डों का पुनर्निर्माण कर लिया गया है. जैश-ए-मोहम्मद का बहावलपुर स्थित मरकज सुभानल्ला मुख्यालय 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान तबाह कर दिया गया था, जिसे और भव्य रूप में फिर से बनाया गया है. वहां जिम, आतंकियों की अंडरवॉटर ट्रेनिंग के लिए स्विमिंग पूल भी है. पाकिस्तानी अधिकारियों ने इसे बनाने के लिए 25 करोड़ रुपये दिए. आतंकी सरगना मसूद अजहर और रऊफ असगर को पाकिस्तान सरकार ने सिंध भेज दिया है, जहां उन्हें पूरा संरक्षण दिया जा रहा है. इस दौरान कश्मीर घाटी में रहने वाले हिंदुओं को धमकी भरे 2 पत्र मिले हैं, जिसमें वहां आकर बसे लोगों के मकान नंबर व सड़क के नाम तथा अन्य विवरण हैं. उन्हें धमकी दी गई है कि वह जहां भी जाएंगे, उन पर निगरानी रहेगी. किसी अहमद बिलाल ने पत्र पर दस्तखत किए हैं. जम्मू कश्मीर में वापस लौटे कश्मीरी पंडितों को प्रधानमंत्री रोजगार योजना के तहत विभिन्न विभागों में नौकरी दी गई है. जब धमकी का पहला पत्र मिला तो राज्य सरकार ने इन हिंदू कर्मचारियों को छुट्टी पर भेजने का निर्देश दिया. उन्हें सतर्क रहने और सुरक्षित स्थानों पर जाने के लिए भी कहा गया. इस दौरान दक्षिण कश्मीर के कुलगाम में ईंट भट्टे पर काम करने वाले 2 प्रवासी मजदूरों की हत्या कर दी गई. एक ओर तो सरकार कश्मीरी पंडितों को वापस लाकर घाटी में बसाने का प्रयास कर रही है, दूसरी ओर आतंकवादी उन्हें धमकियां दे रहे हैं.

निशानेबाज

हर किसी के अपने सरोकार, सभी का अपना-अपना परिवार

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आम तौर पर कहते हैं एकि मेरा कोई अपना परिवार नहीं है. सारे 140 करोड़ भारतवासी मेरा परिवार हैं. उनकी यह सर्वसमावेशक बात बीजेपी के नेता-कार्यकर्ताओं के दिलों को छू गई. इस आत्मीयता से प्रभावित होकर उन्होंने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर अपने नाम के साथ 'मोदी का परिवार' लिखना शुरू किया था. यह देश की परिवारवादी पार्टियों को बीजेपी का करारा जवाब था. इसके बाद जब लोकसभा चुनाव में 'अबकी बार 400 पार' का नारा लगाने वाली बीजेपी जब 240 सीटों पर सिमट गई और बहुमत जुटाने के लिए चंद्राबाबू नायडू और नीतीशकुमार की पार्टियों की मदद लेनी पड़ी, तब पीएम मोदी ने अपने पार्टी नेताओं और समर्थकों से अपने सोशल मीडिया अकाउंट से 'मोदी का परिवार' का पुछल्ला हटा देने को कहा.'

हमने कहा, 'परिवार का इस तरह बंटाढार होना

ठीक नहीं है. याद कीजिए, पुराने बड़े संयुक्त परिवार में जहां बच्चे-बूढ़े, दादा-दादी, चाचा-चाची उनके बेटे बहुएं मिलाकर एक छत के नीचे 25-30 लोगों का परिवार रहा करता था. हर साल-दो साल में नया मेहमान जन्म लेता था और पालना हिला करता था. मेहमान आकर ठहर जाते थे और महीने भर से ज्यादा टिके रहते थे. कुछ दूर के रिश्तेदार भी परिवार में मुंहबोले संबंध का हवाला देकर डेरा जमा लेते थे. खेतों का अनाज आने से खाने की कमी नहीं पड़ती थी. मेहनती और निकम्मे, कमाने वाले और बेरोजगार सभी संयुक्त परिवार में खप जाते थे. घर का एक मुखिया रहता था. उसी का आदेश सभी पर चलता था.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज हमने भी बड़ी जॉइंट फैमिली देखी है, लेकिन अब परिवार का मतलब पति-पत्नी और 2 बच्चे रह गया है. परिवार छोटा और जरूरतें बड़ी हो गई हैं. मजबूत आर्थिक आधार और बेहतर जीवनस्तर हासिल करने के लिए शादी भी काफी देर से की जाती है. नई पीढ़ी खूब कमाती और भरपूर खर्च करती है. बुजुर्गों की दादागिरी का जमाना बीत गया. अब जो बुजुर्ग बदली परिस्थिति में खुद को एडजस्ट कर लेते हैं, वे सुखी रहते हैं.'

शब्द-सागर 12360

- डॉ. सागर खादीवाला

ऊपर से नीचे
1. कृष्ण (सं.) 2. पकड़ा हुआ, पीड़ित 3. दूर करना, हटाना, जिसकी वस्तु हो उसकी इच्छा के विरुद्ध लेना 4. दूध-दही-घी-चीनी और शहद मिलाकर देवताओं के स्नान के लिए बनाया जाने वाला पदार्थ 5. नकली, बनावटी, किसी वस्तु में बने छोटे-छोटे छेदों का समूह 9. दुबला-पतला, सूक्ष्म 11. हृदय का स्पंदन 12. झपटकर या शीघ्रता से आगे बढ़ना, टूट पड़ना 13. अतिथि 14. बायां, उल्टा 15. शत्रु, बैरी 16. स्थिर न रहने वाला, चंचल 17. मोटा और गुदगुदा बिछौना

बाएं से दाएं
1. शादी-ब्याह (सं.) 4. हाथ या पैर की पांचों उंगलियों का समूह 6. एक दूसरी के ऊपर लगी हुई परत 7. द्रौपदी, कपड़े की बनी गुड़िया या पुतली 8. गवाह, वह जिसने कोई घटना अपनी आंखों से देखी हो 10. लड़ाई, युद्ध, जंग 11. तल, सतह, पृथ्वी 13. राजस्थान की प्रसिद्ध भूमि 15. मूर्ख 16. भूमि का बड़ा टुकड़ा 17. गौरव, महत्व, गुरुत्व 18. एक प्रकार का शर्बत जो आम या इमली से बनाया जाता है 19. नत, विनीत 20. एक प्रसिद्ध जंगली जाति जो राजपूताने में पाई जाती है

Solution 12359

ज	ग	मो	ह	न		स	क
ग		च	म	क		म	द
म	चा	न		ना	मा	व	ली
ग	ल		स		व	य	
	बा	व	ला		त	स्क	र
का	जी		ह	वि			हा
र		न	का	रा	त्म	क	
टा	पू		र	ट		भी	ड़

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक योजनाओं में लाभ होगा. पुरानी समस्याओं से छुटकारा मिलेगा. वर्ष के मध्यमें लिया गया निर्णय सार्थक होगा. शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. वर्ष के अन्त में कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी. भाईयों से मतभेद बढ़ेगे. कानूनी मामलों में भागदौड़ करना पड़ेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को आर्थिक लाभ होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को कार्य क्षेत्र में व्यस्तता रहेगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को पुरानी समस्याओं से छुटकारा मिलेगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को आर्थिक योजनाओं में लाभ होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को महिला जाति की सलाह लेना हितकर रहेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना हितकर रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, चतुर, भाग्यवान, तथा परिश्रमी रहेगा, जिस कार्य को ठान लेगा, उसे पूरा करके ही छोड़ेगा, शिक्षा अच्छी होगी, व्यापार और नौकरी दोनों में अच्छी तरक्की करेगा, धार्मिक कार्यो में झुकाव रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

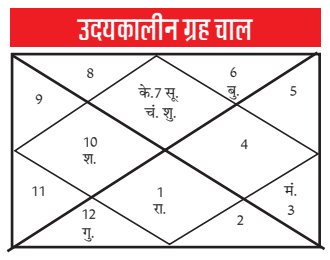

पंचांग

रा.मि. 04 संवत् 2083 श्रावण शुक्ल त्रयोदशी बुधवासरे दिन 7/21, श्रवण नक्षत्रे रात 1/29, सौभाग्य योगे दिन 9/42, तैतिल करणे सू.उ. 5/40, सू.अ. 6/20, चन्द्रचार मकर, शु.रा. 10, 12, 1, 4, 5, 8 अ.रा. 11, 2, 3, 6, 7, 9 शुभांक- 3, 5, 9.

व्यापार भविष्य

श्रावण शुक्ल त्रयोदशी को श्रवण नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड चीनी, में पूर्व की चाल रहेगी, जीरा, धनियां, हल्दी में मंदी होगी, सोना, चांदी, में उतार चढ़ाव रहेगा, वायदा विचार आज जिस कार्य में वस्तु के भाव टूटें उसी में अगले दिन तेजी होगी. भाग्यांक 2607 है.

मेष- सामूहिक कार्य में सभी की सलाह लाभदायक रहेगी, बुजुर्गों के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी, सामाजिक कार्यों में सफलता प्राप्त होगी.

वृषभ- बातो बातों में नई शुरूआत हो सकती है, जरूरतें पूरी करने उधारी संभव है, पुराने पेंडिंग पड़े कार्य बनेंगे, योजनाओं का विस्तार होगा.

मिथुन- राजकीय मामलों में लापरवाही से नुकसान होगा, शादी विवाह की चर्चा में सफलता मिलेगी, अधूरे कार्यों में गति आयेगी, शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी.

कर्क- धार्मिक आयोजन में खर्च होगा, न चाहते हुये भी लोगों की आलोचना झेलना पड़ सकती है, सोचे कार्य बिलंब से होंगे, विवादों का समाधान होगा.

सिंह- कानूनी पक्ष मजबूत होगा, करीबी लोगों के व्यवहार से दुख होगा, मानसिक अस्थिरता रहेगी, नियमित कार्यों में व्यवधान आ सकता है.

कन्या- सुविधा की कमी से कार्य में मुश्किल आयेगी, अनुभव का लाभ मिलेगा, नौकरी तथा राजकीय कार्यों में अच्छा समाचार मिलेगा.

तुला- मतभेद दूर होने से रिश्ते मजबूत होंगे, रूखे व्यवहार से मित्र वर्ग नाराज होगा, रोगी की चिन्ता रह सकती है. पुराना कार्य बनेगा, अचानक धन लाभ होने का योग है.

वृश्चिक- डूबा धन मिलने के आसार है, अपनों के व्यवहार से खिन्नता होगी, नवीन योजना बनेगी. व्यवसाय से लाभ होगा, मित्रों से मतभेद हो सकता है.

धनु- सामाजिक कार्यो से जुड़े लोगों से अच्छा लाभ होगा, भूमि भवन मकान आदि के कार्यों में समस्या का समाधान होगा, पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

मकर- कार्य के संबंध में अनुकूल आश्वासन मिलेंगे, लापरवाही से काम पूरे नहीं होगे, दिदनचर्या नियमित रहेगी, परिश्रम अधिक करना होगा.

कुम्भ- दुविधा की स्थिति में फैसला लेना मुश्किल होगा, गुमी वस्तु मिलने का योग है, पारिवारिक दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी, परिश्रम अधिक करना होगा.

मीन- अपने लोग ही उलझाने का प्रयास कर सकते हैं, मांगलिक कार्य पर विचार होगा, मान सम्मान में वृद्धि होगी, व्यक्ति विशेष की सलाह लेना हितकर रहेगा.

SUDOKU 7492

3	9				1			
5	4			6	8		1	3
		1		7		9	5	
	8	9		5	3		4	7
6	1		4	9		2	3	
	3	4		1		8		
7	5		8	3			2	4
			6				7	9

ग प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ग पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ग पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7491

9	6	2	3	4	1	7	5	8
1	4	8	9	7	5	6	2	3
5	7	3	2	6	8	1	4	9
3	2	1	6	9	4	8	7	5
4	8	7	5	1	2	9	3	6
6	9	5	8	3	7	4	1	2
8	3	4	7	2	6	5	9	1
2	1	6	4	5	9	3	8	7
7	5	9	1	8	3	2	6	4

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी